विद्यालङ्कार [B.A.(Hons.) Sanskrit]
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृत विषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Elective Course for Sanskrit
सत्र- षष्ठ Semester –VI

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र | **संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता** | **पूर्णाङ्क -100**

(DSE- Paper)

Environmental Awareness in Sanskrit literature | **सत्रान्त परीक्षा -70**

Paper Code - HSA-E614

आन्तरिक परीक्षा-30

क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम (Course)
खण्ड- क (Section- A) पर्यावरणीय विषय और संस्कृत साहित्य का महत्त्व
खण्ड- ख (Section-B) वैदिक साहित्य में पर्यावरण जागरूकता
खण्ड- ग (Section- C) लौकिक संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

प्रत्येक देश की राष्ट्रीय संस्कृति का आधार उसका पर्यावरण, जलवायु और प्राकृतिक स्रोत जैसे संसाधनों के साथ मानवीय व्यवहार पर आधारित होता है। संस्कृत भाषा भारत की संस्कृति और सभ्यता का वाहन है। संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित प्रकृति पर आधारित एवं पर्यावरण के अनुकूल विचार, अनन्त काल से जनमानस की सेवा कर रहे हैं। प्राचीन भारत में सम्भवतः धर्म शब्द प्रकृति के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए प्रयोग किया जाता था। इसीलिए संस्कृत साहित्य न केवल हमारे लिए महत् उपकारी है, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए उसका उतना ही मूल्य है। इस पाठ्यक्रम का प्रयोजन भी यही है कि छात्र भारतीय पर्यावरण विज्ञान और उसके मुख्य वैशिष्ट्य के साथ पर्यावरण जागृति से जुड़ सकें जैसा कि वैदिक और शास्त्रीय संस्कृत में इसका स्वरूप है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्र पर्यावरण प्रदूषण के वास्तविक अर्थ से परिचित होगा। वर्तमान में प्रवर्धमान अनेकविध भौतिक, सामाजिक, धार्मिक दूषणों से निश्चयेन बच सकेगा।
2. समस्त प्रदूषणों का मूल वैचारिक दूषण है, इसकी समझ, जागरूकता आने पर कोई भी समाज, देश और विश्व स्वयमेव पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ होना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
पर्यावरणीय विषय और संस्कृत साहित्य का महत्त्व

घटक-क (Unit-1) पर्यावरण विज्ञान- परिभाषा, क्षेत्र और आधुनिक संकट, मानवसभ्यता में पर्यावरण की भूमिका, अर्थ और पर्यावरण की परिभाषा, पर्यावरण विज्ञान के विभिन्न नाम : पारिस्थितिकी, पर्यावरण, प्रकृति विज्ञान, पर्यावरण के मुख्य घटक-जीव-जगत् और भौतिक पदार्थ। पर्यावरणीय भौतिक तत्त्वों के प्राथमिक कारक,जैविक तत्त्व और सांस्कृतिक तत्त्व।

घटक-ख (Unit-2) पर्यावरण की आधुनिक चुनौतियां और संकट :- ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, ओजोन की कमी, प्रदूषण में वृद्धि, भूमिगत जल स्तर में ह्रास, नदी प्रदूषण, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे -बाढ़, भूकंप,सूखा आदि।

घटक-ग (Unit-3) संस्कृत साहित्य की पर्यावरणीय पृष्ठभूमि : पर्यावरण विज्ञान के दृष्टिकोण से संस्कृत साहित्य का महत्व, वैदिक साहित्य में मातृ भूमि की अवधारणा और नदियों के प्रति पूजाभावपर्यावरण के मुद्दों का संक्षिप्त सर्वेक्षण जैसे कि माँ प्रकृति माँ की सुरक्षा और संरक्षण, जंगलों में पेड़ लगाना और संस्कृत साहित्य में प्रस्तावित जल संरक्षण तकनीक। बौद्ध और जैनों की पारिस्थितिकी की अवधारणाएं , पेड़ों की सुरक्षा, जानवरों और पक्षियों के प्रति स्नेह।

खण्ड – ख (Section–B)

वैदिक साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

घटक-क (Unit-1) वैदिक साहित्य में प्रकृति के लिए पर्यावरणीय मुद्दे और पर्यावरण-प्रणाली, वैदिक साहित्य में प्रकृति के प्रति दैवीभाव, ब्रह्माण्ड की सभी प्राकृतिक शक्तियों के मध्य समन्वय, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पर्यावरण के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में ब्रह्माण्डीय व्यवस्था ऋत (ऋग्वेद, 10.85.1) अथर्ववेद में पर्यावरण के लिए समकक्ष शब्द : वृतावृता (12.1.52) , अभीवार, (1.32.4 , आवृत्त (10.1.30) , परिवृत (10.8.31) ; पर्यावरण द्वारा आच्छादित ब्रह्माण्ड के पांच मूल तत्व : पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश (ऐतरेय उपनिषद ३.३) ; पर्यावरण के तीन घटक तत्त्व, जिन्हें छन्दांसि के रूप में जाना जाता है: जल,, वायु और औषधि। (अथर्ववेद, 18.1.17) ; पाँच रूपों में जल के प्राकृतिक स्रोत : वर्षा जल (दिव्य), स्रवन्ती (प्राकृतिक झरना) , कुएँ और खानित्रिमा (नहर)) , स्वयमजाः (झीलें) और समुद्रियः आपः नदियाँ (समुद्रिय:),ऋग्वेद, 7.49.2।

घटक-ख (Unit-2) वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण: पर्यावरण संरक्षण के पांच प्राथमिक स्रोत: पर्वत (पर्वत) , सोम (जल) , वायु (वायु) , पर्जन्य (वर्षा) और अग्नि (अथर्ववेद, 3.21.10) ; सूर्य से पर्यावरण संरक्षण (ऋग्वेद, 1.191.1-16), अथर्ववेद, 2.32.1-6, यजुर्वेद, 4.4.10.6) ; जीवन के अनूकुल वातावरण हेतु उत्पन्न जडी बूटी एवं पौधों का समूह, (अथर्ववेद, 5.28.5) , महत् उल्व (ओजोन परत) की वैदिक अवधारणा (ऋग्वेद 10/51/1) , अथर्ववेद (4/2/8) वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए पौधों और जानवरों का महत्त्व, (यजुर्वेद 13.37) उपनिषदों में पर्यावरण के अनुकूल पर्यावरणीय जीव (बृहदारण्यक उपनिषद, 3.9.28, तैत्तिरीय उपनिषद, 5.101, ईशो० उपनिषद, 1.1)

खण्ड – ग

(Section–C)

लौकिक संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

घटक-क (Unit-1) पर्यावरण जागरूकता और वृक्षारोपण : पुराणों में एक पवित्र गतिविधि के रूप में वृक्षारोपण (मत्स्य पुराण; 59.159; 153.512; वराह पुराण 172. 39) ,राजा द्वारा वन में विविध औषधीय पादपों का रोपना,(शुक्रनीति- 4.58.62) (अर्थशास्त्र, २.१.२०) पेड़ों और पौधों को नष्ट करने पर दंड विधान (अर्थशास्त्र, 3.19) , भूजल के पुनर्भरण के लिए वृक्षों का रोपण (बृहत् संहिता 54.119)

घटक-ख (Unit-2) पर्यावरण जागरूकता और जल प्रबंधन :- सिंचाई के लिए विभिन्न प्रकार की नहरें (कुलया) : नहर नदी से उत्पन्न नहरें (नदीमातृमुखा कुल्या) , पर्वत से उत्पन्न नहरें (पर्वतपार्श्ववर्तिनी कुल्या) , तालाब से उत्पन्न नहरें (ह्रद्सृतकुल्या) , जल स्रोतों का संरक्षण वापी-कूप-तड़ाग (अग्निपुराण 209. 2, रामायण, 2.80.10-11) ; अर्थशास्त्र में जल संचयन प्रणाली (2.1.20-21) ; बृहत् संहिता में भूमिगत जल विज्ञान (दकार्गलाध्याय ५४)

घटक-ग (Unit-3) कालिदास के साहित्य में सार्वभौमिक पर्यावरणीय मुद्दे : पर्यावरण के आठ तत्त्व और अष्टमूर्ति शिव की अवधारणा (अभिज्ञानशाकुंतलम् 1) ; वन, जल संसाधन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण; कालिदास की कृतियों में पशु, पक्षियों और पौधों का संरक्षण, अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता, मेघदूत में भारतीय मानसून का पारिस्थितिकी तन्त्र (इको-सिस्टम) , ऋतुसंहार में भारतीय उपमहाद्वीप के मौसम की स्थिति, कुमारसम्भव में हिमालयी पारिस्थितिकी, रघुवंश में समुद्रशास्त्र (रघुवंश-13 सर्ग)।

प्रश्नपत्र निर्माण-प्रारूप-

इस प्रश्न पत्र में खण्ड क लघूत्तरीय एवं खण्ड ख दीर्घोत्तरीय के रूप में दो विभाग होंगे

खण्ड क के अन्तर्गत सभी खण्डों से कुल दस समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक/ वर्णनात्मक प्रश्न प्रष्टव्य रहेंगे जिनमें से पांच का उत्तर देना अनिवार्य होगा। इसमें प्रथम एवं दितीय प्रश्न में से किसी **05x6 = 30**

एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य एवं संस्कृत भाषा में ही उसका उत्तर अपेक्षित होगा।

खण्ड ख के अन्तर्गत सभी खण्डों से कुल आठ समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक/ वर्णनात्मक दीर्घोत्तरीय प्रश्न प्रष्टव्य होगें जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । इसमें प्रथम एवं दितीय प्रश्न में से किसी एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य एवं संस्कृत भाषा में ही उसका उत्तर अपेक्षित होगा। **04x10 = 40**

इस प्रश्न पत्र में खण्ड क लघूत्तरीय एवं खण्ड ख दीर्घोत्तरीय के रूप में दो विभाग होंगे

अनुशंसित ग्रन्थ (Suggested Books/Readings)

1. ArtHSAHSAtra of Kautilya—(ed.) Kangale, R.P. Delhi, Motilal Banarasidas 1965
2. Atharvaveda samhita.(2 Vols — (Trans.) R.T.H. Griffith, Banaras 1968.
3. Ramayana of Valmaki (3 Vols) — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59.
4. Rgveda samhita (6 Vols) — (Eng. Tr.) H.H. Wilson, Bangalore, 1946.
5.Bhandarkar, RG— Vaishnavism, Saivism and Minor Religious Systems, Indological Book House, Varanasi, 1965
6. Das Gupta, SP— Environmental Issues for the 21st Century, Amittal Publications, New Delhi, 2003
7. Dwivedi, OP, Tiwari BH — Environmental Crisis and Hindu Religion, Gitanjali Publishing House, New Delhi,1987
8. Dwivedi, OP — The Essence of the Vedas, Visva Bharati Research Institute, Gyanpur, Varanasi ,1990
9. Jernes, H (ed.) —Encyclopedia of Religion and Ethics (Vol. II) , New York: Charles Szcribmer Sons, 1958.
10. Joshi, PC, Namita J—A Textbook of Environmental Science, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2009
11. Sinha, KR) — Ecosystem Preservation Through Faith and Tradition in India. J. Hum. Ecol., Delhi University, New Delhi, 1991
12. Trivedi, PR—Environmental Pollution and Control, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2004
13. Pandya,SmtaP. — Ecological Renditions in the Scriptures of Hinduism – I (article) Bulletin of the Ramakrishna Mission Institute of Culture.
14. Renugadevi, R. —Environmental Ethics in the Hindu Vedas and Puranas in India, (article) African Journal of History and Culture , Vol. 4(1) , January 2012
15. Kumar, B M. — Forestry in Ancient India: Some Literary Evidences on Productive and Protective Aspects, (article) AsianAgri- History,
16. Vol.12, No.4, 2008.
17. Kiostermair,Klaus—Ecology and Religion: Christian and Hindu Paradigms (article) Jornal of Hindu-Christian Studies, Butler university Libraries, Vol.6,1993